



अप्रैल 2018

वर्ष : 1 अंक : 7

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



अप्रैल माह के दौरान संस्थान में कई गतिविधियों को सुचारु रूप से कार्यान्वित किया गया। इस सन्दर्भ में मैं संस्थान एवं अपनी तरफ से आप सभी और अपने सभी सहकर्मियों को धन्यवाद देता हूँ। मत्स्य पालन और प्रबंधन प्रणालियों से जुड़े सभी कृषकों एवं हितधारकों के लिए संस्थान समय समय पर अपने उत्कृष्ट शोधों द्वारा नयी नयी तकनीकों का प्रचार प्रसार करता रहता है। इन

तकनीकों का समय पर कृषकों को लाभ मिले, इसके लिए संस्थान के सहकर्मों हमेशा किसानों और मछुआरों के बीच संवाद करते रहते हैं। विकास की ओर अग्रसर मत्स्य विज्ञान के क्षेत्र में भी संस्थान अपना सहयोग देता रहता है। संस्थान में मात्स्यिकी एवं मत्स्य विज्ञान के प्रशिक्षण के लिए उच्चतम व्यवस्था की गयी है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में देश विदेश के विद्यार्थियों और कृषकों के लिए इस संस्थान के सभी कर्मचारी अपना सहयोग देते हैं। इसके अलावा इस माह में भी यह संस्थान मात्स्यिकी क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास के लिए अनेक गतिविधियों का गवाह बना। एक जागरूकता कार्यक्रम के द्वारा तीस्ता नदी के सभी हितधारकों की सहभागिता और सह-प्रबंधन द्वारा लुप्तप्राय मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण की आवश्यकता पर लोगों को संवेदनशील बनाया गया। दूसरी तरफ माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी ने चार आर्द्रभूमि मत्स्य विकास परियोजनाओं का शुभारम्भ किया जिसके निष्पादन का दायित्व हमारे संस्थान को दिया गया है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ के अधिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आरम्भ किया गया इस संस्थान को अभी ओर बहुत सारे कार्य करने हैं ताकि दूसरी नील क्रांति का जल्द से जल्द आरम्भ हो सके। वैज्ञानिकों और मत्स्य पालकों के बीच की दूरी को हमेशा के लिए मिटाना भी हमारा एक लक्ष्य है। इन्हीं शब्दों के साथ आपके लिए अप्रैल मास का यह अंक प्रस्तुत है।

विक्रम

मुख्य शोध उपलब्धियां

मानसून पश्चात केरल के कुलियार नदी के अझीनिलाम और फिरोक से जल के नमूनों को इकट्ठा किया गया। इन जल के नमूनों में प्राचलों की मात्रा सामान्य से अधिक पाई गई (जल का हार्डनेस 2420-3660 मि.ग्रा. प्रति ली0, क्लोरिन 7659-14319.6 मि.ग्रा. प्रति ली0, तथा विशिष्ट चालकता 21748-34033 μ ओम प्रति से0मी0)। इससे यह पता चला कि ओखी चक्रवात के कारण इस ज्वारनदमुख में समुद्री जल को समावेश होने के कारण इन जल प्राचलों में यह परिवर्तन देखा गया।

कावेरी नदी के नौ सैंपलिंग स्टेशनों का सर्वेक्षण यह बताता है कि कावेरी नदी पर बांध, बैराज, मेड़ आदि बनने के कारण इसका जल प्रवाह बाधित हुआ है। इससे नदी का जल स्थिर अथवा इसका प्रवाह अत्यन्त ही धीमा हो गया है जिससे नदी में जलीय मेक्रोफाइट का जमाव होने लगा है। नदी में जैव तत्वों के जमाव, घने जलीय खरपतवार आदि के कारण विदेशी मछली तिलापिया प्रजाति, ओ.मोसाम्बिकस की प्रचुरता लगभग 69.14 प्रतिशत बढ़ गई है।

ग्रीष्मकाल में कटक की काठजोड़ी तथा अन्य नदियों में जलस्तर घट जाता है एवं इनमें कटक शहर के अवशिष्टों को बहाया जाता है जिससे काठजोड़ी नदी में बी.ओ.डी.की मात्रा 15 पी.पी.एम. तक बढ़ जाती है, अतः इस समस्या के समाधान हेतु संस्थान लगातार निदान तलाश कर रहा है।

बिहार के पूर्वी चम्पारण जिले के चार आर्द्रक्षेत्रों, मझरिया, कररिया, रूलही तथा सिरसा में पिंजरे में मछली पालन तकनीक का प्रयोग किया गया।

कृष्णागिरी जलाशय में फॉस्फेट और नाइट्रेट का स्तर सामान्य से अधिक पाया गया है जिसके कारण इस जलाशय में जलीय खरपतवार का धनत्व अधिक हो गया है।

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री द्वारा बिहार में मन विकास परियोजना का शुभारम्भ

13 अप्रैल 2018 को मोतिहारी जिला स्कूल मैदान में राजकीय कृषि उन्नति मेला के अवसर पर माननीय केन्द्रीय कृषि एवं कृषि कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी ने राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त एवं भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा संचालित कररिया, सिरसा, मझरिया एवं रुह्नी मन की



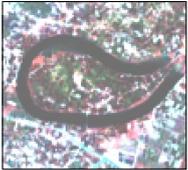
मात्स्यिकी विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया। बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा इन परियोजनाओं को निष्पादित किया जा रहा है। ये चार परियोजनाएं निम्न हैं,



1. बिहार के कररिया मन (क्षेत्रफल 120 हेक्टर) में मत्स्यपालक समुदायों और हितधारकों के सशक्तिकरण के माध्यम से बेहतर आजीविका का अवसर और क्षमता निर्माण के लिए भागीदारी - एक अभिनव परियोजना



2. बिहार के सिरसा मन (क्षेत्रफल 70 हेक्टर) में मत्स्य मछली उत्पादन क्षमता को टैप करने के लिए मत्स्य पालन वृद्धि तकनीक (स्टॉकिंग एन्हांसमेंट, कलम संस्कृति) के माध्यम से मात्स्यिकी विकास - एक अभिनव परियोजना



3. साइट विशिष्ट मात्स्यिकी संवर्धन प्रौद्योगिकी के परिष्करण के माध्यम से बिहार के मझरिया मन (क्षेत्रफल 120 हेक्टर) में मात्स्यिकी विकास - एक अभिनव परियोजना



4. हितधारकों के सहभागिता मत्स्य प्रबंधन प्रबंधन मॉडल (सह-प्रबंधन) के माध्यम से बिहार के रुह्नी मन (क्षेत्रफल 80 हेक्टर) में सतत तरीके से मात्स्यिकी विकास - एक अभिनव परियोजना

इस अवसर पर श्री सचिन्द्र प्रसाद सिंह, माननीय विधायक, श्री बबलू गुप्ता, माननीय विधानसभा पार्षद, डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), डॉ. एस. रायजादा, सहायक महानिदेशक (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), डॉ. ए. के. सिंह, उप महानिदेशक (कृषि प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, डॉ. ए. के. सिंह, उप महानिदेशक (बागवानी), डॉ. आर. के. श्रीवास्तव, कुलपति, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार, डॉ. रामेश्वर सिंह, कुलपति, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना; डॉ. गोपाल कृष्णा, निदेशक, केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई; डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान

संस्थान, बैरकपुर, डॉ. बी. पी. भट्ट, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय मंत्री ने उद्घाटन सत्र में भाषण देते हुए कहा कि ये परियोजनाएं क्षेत्र के मछुआरों के परिवार की आजीविका को बढ़ाएंगी और उनकी आय में दुगुनी वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेगी। इससे क्षेत्र के मछुआरों को अधिक दिनों तक रोजगार मिलेगा।

बिहार के चार मन में मत्स्य अंगुलिकाओं का संचयन

संस्थान द्वारा संचालित एवं राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त मन मात्स्यिकी विकास परियोजनाओं के अंतर्गत चार मन



यथा कररिया, सिरसा, मझरिया एवं रुह्नी में विभिन्न प्रजातियों की मत्स्य अंगुलिकाओं का संचयन किया गया। कतला, रोहू, मृगल, कॉमन कार्प एवं ग्रास कार्प प्रजाति के 10 सेमी एवं उससे बड़े आकार के अंगुलिकाओं का संचयन किया गया।

मझरिया मन में अंगुलिकाओं के संचयन के अवसर पर प्रसिद्ध मत्स्य वैज्ञानिक, डॉ. दिलीप कुमार एवं संस्थान के निदेशक उपस्थित थे। 13 अप्रैल को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), डॉ. जय कृष्ण जेना ने कररिया एवं सिरसा मन में अंगुलिकाओं का संचयन किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. बसन्त कुमार दास एवं अन्य वैज्ञानिक और राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड के विशेषज्ञ भी उपस्थित थे।

पश्चिम बंगाल के सह क्षेत्र में 'तीस्ता नदी की लुप्तप्राय मछली प्रजातियों के संरक्षण' पर जागरूकता कार्यक्रम

तीस्ता बांध में एन.एच.पी.सी. लिमिटेड (नेशनल हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर कोऑपरेशन) के सहयोग से भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा 19 अप्रैल, 2018 को कालीजोरा, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल में 'तीस्ता नदी, पश्चिम बंगाल की लुप्तप्राय मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण' पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। जागरूकता कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था। सभी हितधारकों की सहभागिता और सह-प्रबंधन द्वारा तीस्ता नदी की प्राय सभी लुप्तप्राय मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण की आवश्यकता पर लोगो तो संवेदनशील बनाना। रियांग, कालिजोरा और कालीम्पोंग गांव के



मछुआरों, रानीनगर के मात्स्यिकी से जुड़े लोग, जलपाईगुड़ी और संरक्षण संगठन, कालीम्पोंग, पश्चिम बंगाल के छह सदस्यों को सहित लगभग 60 प्रतिभागियों ने इस जागरूकता अभियान में भाग लिया। डॉ.

बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, श्री ए. के. घोष, महाप्रबंधक, तीस्ता बांध चतुर्थ पावर स्टेशन, एन. एच. पी. सी. लिमिटेड, कालीजोरा, पश्चिम बंगाल, श्री एस. के. अग्रवाल, मुख्य अभियंता और प्रभारी, तीस्ता बांध तृतीय एनएचपीसी लिमिटेड, रामबी, पश्चिम बंगाल और श्री आर फोनिंग लेपचा, अतिरिक्त निदेशक,



मत्स्यपालन विभाग, पश्चिम बंगाल ने इस कार्यक्रम के दौरान मात्स्यिकी से जुड़े किसानों के साथ अपने विचार साँझा किए। श्री ए के घोष, महाप्रबंधक, टी.एल.डी. चतुर्थ पी.एस. ने जागरूकता कार्यक्रम का प्रोत्साहन बढ़ाया और तीस्ता नदी की लुप्तप्राय

स्वदेशी मछलियों के संरक्षण के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने तीस्ता नदी की जैव विविधता के संरक्षण के लिए सभी लोगों के सहयोग की कामना व्यक्त की। श्री आर. फोनिंग लेपचा, अतिरिक्त निदेशक, मत्स्यपालन विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, ने उल्लेख करते हुए कहा कि नदियों के पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य के साथ-साथ स्थानीय मछुआरों की आजीविका का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने तीस्ता नदी की लुप्तप्राय मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण पर एक प्रस्तुति दी, जिसमें तीस्ता नदी और इसके संरक्षण कि स्थिति एवं मत्स्य विविधता की वर्तमान स्थिति को उजागर करने पर सुझाव दिए गए थे। उन्होंने भारत में नदियों के महत्व और इसकी जैव विविधता, मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, नदियों से मछली उत्पादन में कमी के मुख्य कारण, स्वदेशी जल जीवों के लिए विभिन्न खतरों और उनसे बचने के प्रभावकारी कदमों के बारे में बताया गया। मत्स्य सीढ़ी/मत्स्य पास विशेषतः प्रवासी मछलियों (विशेष रूप से *नियोलिसोचिलस हेक्सगोनोलिपिस*, चॉकलेट महासीर, *स्किजोथोरैक्स रिचर्डसन* और स्नो ट्राउट, *साइप्रिनियन सेमीप्लॉटम*, असमिया किंग फिश) के लिए लाभदायक है या नहीं। उन्होंने कहा कि हर बांध निर्माण में मत्स्य सीढ़ी/मत्स्य पास नदी के भीतर या उसके आस-पास के किनारे पर मछलियों के प्रवास को सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है। उन्होंने सभी मछुआरों / एंगरों को प्रजनन अवधि में मछली नहीं पकड़ने और नदी में किसी भी विनाशकारी तकनीक का अभ्यास न करने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि 'फिश टैगिंग' द्वारा मछलियों के प्रवासन का अध्ययन किया जा रहा है यदि नदी से टैग की गई मछली को नदी के पास रहने वाले या मछली पकड़ने वाले मछुआरों द्वारा पकड़ा जाता है तो इसकी सूचना तुरंत भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान या एन.एच.पी.सी. को किया जाना चाहिए।

छत्तीसगढ़ मछली पालन विभाग के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

मछली पालन विभाग (डी.ओ.एफ.), छत्तीसगढ़ के अधिकारियों के लिए 5 दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में 9 अप्रैल, 2018 को संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के. दास के कर कमलो से किया गया। सहायक मत्स्य अधिकारी (ए.एफ.ओ.) और मत्स्यपालन निरीक्षक (एफ.आई.) समेत कुल 25 अधिकारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. बसन्त कुमार दास ने उद्घाटन सत्र के दौरान मत्स्यपालन अधिकारियों का स्वागत किया और जलाशय मत्स्यपालन पर विशेष जोर देते हुए कहा कि अंतर्स्थलीय मत्स्यपालन प्रबंधन पर इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का समकालीन महत्व है। इस क्षेत्र के किसानों/मछुआरों के जीवन और आजीविका को सुरक्षित रखने में इसकी अहम भूमिका है। संस्थान के वैज्ञानिकों ने फील्ड एक्सपोजर विज़िट, प्रदर्शन और इन-हाउस क्लास इंटरैक्शन के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया है। इंटरैक्टिव सत्रों में जलाशयों के मत्स्य पालन प्रबंधन और उपलब्ध जल निकायों में मछुआरों की समस्याओं के निदान पर विशेष महत्व देने की बात कही। अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्यपालन के वर्तमान पहलुओं को भी इस कार्यक्रम में शामिल किया गया है। छत्तीसगढ़ के बारहमासी और मौसमी जल निकायों में नदियाँ, जलाशय, छोटी नहरे, और कुछ चेकडैम शामिल होते हैं। इनमें स्टॉक



वृद्धि कार्यक्रम को प्राथमिकता देकर और टिकाऊ प्रबंधन व्यवस्था के द्वारा मत्स्य पालन में वृद्धि की जा सकती है। डॉ. दास ने अधिकारियों से आग्रह किया कि वे अपने संबंधित जल

निकायों के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में प्रशिक्षण लेकर कौशल विकास करें और अपना अनुभव साँझा करें। डॉ. बी. पी. मोहंती, प्रभागाध्यक्ष एफ.आर.ई.एम. विभाग ने छोटी स्वदेशी मछलियों (एस.आई.एफ.एस.) के पौष्टिक मूल्यों पर अधिकारियों को जानकारी दी और छत्तीसगढ़ के अन्तर्स्थलीय खुले जल में इन प्रजातियों को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित भी किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. ए. के. दास, प्रभारी, प्रसार और प्रशिक्षण कक्ष, द्वारा किया गया था।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दो तकनीकों के डिजाइन का पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त किया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर को दो तकनीकों - "कैज कल्चर स्ट्रक्चर" और "टिशू एंबेडिंग मशीन" के लिए मूल डिजाइन पंजीकरण प्रमाणपत्र मिला। इस में से एक तकनीक - "मछली उत्पादन के लिए कैज संरचना" का पंजीकरण डिजाइन संख्या 28874921 है जो नवंबर 2016 को क्लास 30-02 के तहत पंजीकरण के लिए आवेदन



किया गया था और प्रमाण पत्र 1 जनवरी 2018 को पेटेंट कार्यालय, कोलकाता द्वारा जारी किया गया। अन्य तकनीक - "टिशू एंबेडिंग मशीन" की पंजीकरण डिजाइन संख्या 29001412 है और यह जनवरी 2017

को क्लास 24-01 के तहत पंजीकरण के लिए आवेदन किया गया था और इसका प्रमाण पत्र 10 जनवरी 2018 को पेटेंट कार्यालय, कोलकाता द्वारा जारी किया गया। डिजाइन का कॉपीराइट पंजीकरण की अधिकतम अधिकार समय जारी तारीख से लेकर दस वर्ष तक रहेगा।

गुणवत्ता प्रबन्धन प्रणाली के प्रमाणीकरण के लिए निरीक्षण प्रक्रिया

निरीक्षण हेतु प्रमाणीकरण के दूसरे चरण को 11-13 अप्रैल 2018 के दौरान संस्थान में संपन्न किया गया। गुणवत्ता प्रबन्धन प्रणाली के प्रमाणीकरण के लिए यू. आर. एस. कंपनी, नोएडा को आधिकारिक रूप से चुना गया था। यह प्रमाणीकरण संस्थान के मुख्यालय के लिए विशेषतः ISO 9001 : 2015 के अधिदेश के अंतर्गत किया गया। 11 अप्रैल 2018 को प्रथम अधिष्ठापन मीटिंग का आयोजन किया गया। निरीक्षण प्रक्रिया की इस औपचारिक अधिष्ठापन में अध्यक्ष पद पर डॉ. बी. पी. मोहंती, कार्यकारी निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैठे थे और संस्थान के सभी वैज्ञानिक, तकनीकी कर्मचारी, प्रशासनिक और वित्तीय अधिकारियों ने इसमें भागीदारी की। यू. आर. एस. कंपनी (प्रमाणीकरण विभाग) के मुख्य निरीक्षक डॉ. एस. बासु और निरीक्षक श्री एस.



पी. बक्शी ने इस मीटिंग में सबके सामने निरीक्षण आलेख और उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। अगले दो दिनों में संस्थान के विभिन्न विभागों, प्रयोगशालाओं, एवं कक्षों को प्रमाणीकरण के लिए डॉ. बासु और श्री बक्शी ने निरीक्षण प्रक्रिया द्वारा जाँच की। 13

अप्रैल 2018 के पूर्वाह्न में एक समापन मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें इन निरीक्षकों ने अपना अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया। मीटिंग के अंतिम पड़ाव में डॉ. एस. के. नाग ने सभी के लिए धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

बिहार के बेगुसराय जिले के एस के महिला महाविद्यालय के 25 छात्राओं के लिये "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन एवं विकास" के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिनांक 3-6 अप्रैल 2018 के मध्य आयोजित किया गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी द्वारा असम के श्रीकिशन सारदा महाविद्यालय के 15 छात्रों एवं 2 शिक्षकों के लिये "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के सिद्धांत" विषय पर प्रशिक्षण दिनांक 5-7 अप्रैल 2018 के दौरान आयोजित किया गया।

महत्वपूर्ण बैठके

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मात्स्यिकी विभाग, हिमाचल प्रदेश राज्य सरकार के बीच 27 मार्च, 2018 को विलासपुर में बैठक आयोजित हुई जिसका उद्देश्य हिमाचल प्रदेश राज्य के जलक्षेत्रों में पिंजरा में मत्स्य पालन का विकास करना है।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मात्स्यिकी निदेशक, असम सरकार के बीच 02 अप्रैल, 2018 को गुवाहाटी में राज्य स्तर के मत्स्य बीज प्रमाणन एवं प्रत्यापन पर बैठक आयोजित हुई।

दिनांक 6 अप्रैल, 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के बीच सहयोग तथा ज्ञान एवं संसाधन सहभाजन पर एक समझौते ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। इसका उद्देश्य एकीकृत पालन की संभावनाओं पर कार्य करना है।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीव पालन, भुवनेश्वर के बीच 10 अप्रैल, 2018 को भाकृअनुप परिषद् की आगामी क्षेत्रीय समिति बैठक संबंधी विषयों पर विचार-विमर्श करना था।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और आयुक्त सह सचिव, मात्स्यिकी एवं एआरडी विभाग, ओडिशा सरकार के बीच 10 अप्रैल, 2018 को कटक में बैठक आयोजित हुई।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मात्स्यिकी निदेशक, ओडिशा सरकार के बीच 11 अप्रैल 2018 को कटक में बैठक आयोजित हुई जिसका उद्देश्य ओडिशा के जलाशयों में मात्स्यिकी विकास करना था।

11 अप्रैल, 2018 के दौरान भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और ओडिशा सरकार के बीच दो परामर्शी योजनाओं के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। ये परियोजनायें हैं - (1) डीपीआर प्रिपरेशन फॉर द डेवलपमेंट ऑफ़ एक्वाकल्चर क्लस्टर इन पेरीफेरी ऑफ़ चिल्का लैगून

और (2) डीपीआर प्रिपरेशन फॉर द डेवलपमेंट ऑफ़ तम्पारा फॉर कर्मर्शियल यूनिट ऑफ़ एक्वाकल्चर एंड कल्चर बेस्ड फिशरीज।

दिनांक 17 अप्रैल 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलोर और कर्नाटक राज्य के संयुक्त निदेशक (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), संयुक्त निदेशक (समुद्री मात्स्यिकी) तथा 8 क्षेत्रों के उप-निदेशक एवं सहायक निदेशकों के साथ पिंजरे में मछली पालन तकनीक पर प्रदर्शन तथा कर्नाटक की मत्स्य जैवविविधता के मैपिंग आदि विषयों पर बैठक की गई।

प्रसार गतिविधियाँ

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 13 से 15 अप्रैल 2018 को मोतीहारी, बिहार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्वी अनुसंधान परिसर द्वारा आयोजित कृषि उन्नति मेले में भाग लिया एवं



संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यों और विकसित टेक्नोलॉजी को प्रदर्शनी स्टॉल में दर्शाया। श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं कृषि कल्याण मंत्री, श्री प्रमोद कुमार, माननीय पर्यटन मंत्री, बिहार सरकार, श्री बबलू गुप्ता, माननीय

विधान पार्षद बिहार, भाकृअनुप के वरिष्ठ वैज्ञानिक सहित 500 से ज्यादा कृषकों द्वारा प्रदर्शनी स्टॉल का मुआइना किया गया।

सेवानिवृत्ति

इस माह संस्थान से श्री एस. गोविंदराजन कुशल सहायक कर्मचारी (चौकीदार) संस्थान के कोच्ची क्षेत्रीय केंद्र से सेवानिवृत्त हुए। श्री एस. गोविंदराजन ने इस संस्थान में 27 अगस्त 1984 में बदम्पुड़ी आन्ध्रप्रदेश में कार्यभार सम्भाला था।

सम्पादक मंडल की तरफ से

बड़े हर्ष के साथ इस अंक को आप सभी पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारा हमेशा ही यह उद्देश्य रहता है कि आप सभी को इस पत्रिका के द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में नयी नयी जानकारियाँ समय पर मिलती रहे और जो कृषकगण हिंदी भाषा को पढ़ सकते हैं वे भी इस पत्रिका के माध्यम से संस्थान से परोक्ष रूप से जुड़े रहे। हालाँकि हमारा संस्थान कृषकों, विद्यार्थियों और वैज्ञानिकों के लिए विभिन्न गतिविधियों को उनकी अपनी भाषा, चाहे वह हिंदी हो या अंग्रेजी या फिर कोई अन्य राजकीय भाषा हो, में संवाद करता आ रहा है। हमने इस अंक या पिछले सभी अंकों द्वारा आप तक जो जानकारियाँ उपलब्ध करवाई हैं वे सब आप लोगों के उचित मार्गदर्शन और संस्थान के निदेशक महोदय के सहयोग से ही संपन्न हो पाया है। हमारा संस्थान आगे जाकर और भी मत्स्य गतिविधियों को अंजाम देता रहेगा क्योंकि यह हमारा उद्देश्य है कि हमारे सभी मत्स्य पालक और उससे जुड़े कृषकों का सामाजिक और आर्थिक उत्थान हो सके। इस अंक के लिए हम अपने सभी वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों के साथ साथ प्रशासनिक और वित्तीय कर्मचारियों के सहयोग के लिए आभारी हैं।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in